एक ख़त

प्यारी बेटी

के नाम

अल्लामा शेख़ अली तन्तावी

अनुवाद :

डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का मूल नाम	:	या बिन्ती (अरबी)
लेखक	:	अल्लामा शेख अली तन्तावी
उर्दू अनुवाद (लख़्ते जिगर)	:	अब्दुल हक़ फ़लाही
हिन्दी अनुवाद (प्यारी बेटी)	:	डा० रफ़ीक़ अहमद
हिन्दी एडीशन	:	2011
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	16
डिज़ाइनिंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर—फ़तेहपुर
क़ीमत	:	दुआये ख़ैर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द, फ़तेहपुर

بسم الله الرحمن الرحيم

प्यारी बेटी !

ज़िन्दगी की पचास बहारें देख चुका हूँ और अब हाल यह है कि शबाब रुख़सत हो चुका है। उसी के साथ जवानी की तमन्नाओं और उसके सुहावने ख़्वाबों को भी भुला चुका हूँ। देश-विदेश घूमा फिरा, लोगों से मुलाकातें कीं और दुनिया के हालात से अवगत भी हुआ । तो अब ऐ प्यारी बेटी ! एक बात मेरी भी सुन ! जो मेरी उम्र और मेरे अनुभव के आधार पर सही और स्पष्ट है। जिसे तूने किसी और से न सुना होगा ।

हम इससे पहले भी लिखते और कहते आये हैं कि अख़लाक़ ठीक करो, बिगाड़ ख़त्म करो, वासना तथा बुरी इच्छाओं पर लगाम लगाओ, ये चीज़ें लिखते-लिखते और आवाज़ लगाते-लगाते हमारे क़लम के सिपाही थक गये और ज़बानें सूख गयीं, लेकिन फिर भी क़ौम ने अनसुनी कर दिया और हमारी आवाज़ रेगिस्तान की आवाज़ साबित हुयी । उल्टे यह हुआ है कि बुराइयों में दिन ब दिन वृद्धि होने लगी और बिगाड़ फैलने लगा, बेपर्दगी आम हो गयी, नग्नता और अश्लीलता चरमसीमा पर पहुंच गयी। इसका दायरा किसी ख़ास मुल्क या समाज तक सीमित न रहा, बल्कि अब तो मेरे ख़्याल के मुताबिक़ कोई भी मुस्लिम देश बेपर्दगी और नग्नता की इस अभिशाप से सुरक्षित न रहा। यहां तक कि मुल्क शाम जहाँ पर्दे को सख़्ती से लागू किया जाता था और इज़्ज़त व सम्मान की सुरक्षा करने और शारीरिक अंगों को ढाकने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया जाता था, अब इस मुल्क की औरतें बेपर्दा और बेशर्मी से घूमती फिरती हैं। यहां तक कि शरीर का काफी हिस्सा खुला हुआ रहता है।

हम इस बुराई को ख़त्म करने में कामयाब नहीं हुये और न आइन्दा इसकी उम्मीद ही नज़र आती है। तुम्हें मालूम है कि ऐसा क्यों है ? इसलिये कि समाज को सुधारने का काम तो हमने अभी शुरू ही नहीं किया और न यही मालूम हो सका कि सुधार हो तो कैसे हो?

बेटी ! इस्लाह यानी सुधार का दरवाज़ा तो तुम्हारे सामने खुला हुआ है, उसकी कुन्जी भी तुम्हारे हाथ में है। जब तुम इस हक़ीक़त को मान लोगी की वाक़ई तुम्हारी इस्लाह का दरवाज़ा खुला हुआ है, और तुम उसमें दाखिल भी हो जाओगी तो बिगाड़ आपसे आप दूर हो जायेगा और हालात बिल्कुल ठीक हो जायेंगे।

यह सही है कि गुनाह के रास्ते में पहला क़दम मर्द ही उठाता है, औरत कभी पहल नहीं करती। लेकिन यह भी सच है कि अगर तुम्हारी मर्ज़ी शामिल न हो तो वह अपने मक़सद में कभी कामयाब नहीं हो सकता। तुम्हारे दिल में अगर नर्मी न हो तो वह इस संगीन जुर्म को कर ही नहीं सकता। यह तुम ही हो जिसने उसके लिये अपने दरवाज़े खोल रखे हैं और वह उसमें दाख़िल होने में कामयाब हो सका है। तुम चोर से कहती हो कि तशरीफ़ लाइये, पधारिये, दिलो निगाह बिछे हुये हैं, और जब वह अपना काम कर चुकता है तो फिर चीखती हो कि दौड़ो, बचाओ मैं तो लुट गयी।

अगर तुम्हें मालूम होता कि सारे मर्द भेड़िये हैं और तुम बकरी हो तो तुम भी बकरी ही की तरह भेड़िये से दूर भागती और अगर तुम्हें पता होता कि यह सारे चोर, डाकू और उचक्के हैं तो तुम उनसे उसी तरह बचती जैसे मालदार अपना माल चोर और डाकुओं से बचाता है।

भेड़िये की नज़र बकरी के सिर्फ़ गोश्त पर होती है और मर्द तुम्हारी जिस चीज़ के इच्छुक होते हैं वह तो बकरी के गोश्त से भी ज़्यादा तुम्हारी नज़र

में क़ीमती है और उसका लुट जाना मौत से भी बढ़कर दर्दनाक है। उसकी नज़र तो तुम्हारी उस चीज़ पर है, जिससे वंचित हो जाना तुम पर बहुत भारी है। यह पाकदामनी (सतीत्व) वह चीज़ है जिसको संभाल-संभाल कर तुम रखती हो और जो तुम्हारे लिये वह क़ीमती पूंजी है जिसके वजूद से तुम ज़िन्दा हो। उस लड़की की ज़िन्दगी जिसकी इज़्ज़त और सम्मान की चादर को किसी मर्द ने गन्दा और कलंकित किया है, उस बकरी की मौत से भी जिसे किसी भेड़िये ने नोच खाया हो, हज़ार दर्जा बुरा है। ख़ुदा की क़सम जब भी कोई नौजवान किसी लड़की को देखता है तो उसे कल्पनाओं की दुनिया में बेलिबास देखता है और उसे हासिल करने के लिए सभी तरीक़े इस्तेमाल करता है।

मैं फिर क़सम खाकर कहता हूँ कि बख़ुदा तुम मर्दों की इन चिकनी-चुपड़ी बातों के चक्कर में हरगिज़ न आना कि वह तो उस लड़की से कोई और मतलब और मक़सद नहीं रखते, वह तो उसकी शालीनता और नैतिकता की वजह से बहुत क़रीब हैं, वह तो बस दोस्ताना माहौल की गुफ़्तगू करते हैं और दोस्त की तरह उसे चाहते भी हैं। बख़ुदा यह सरासर झूठ है। अगर तुम नौजवानों की एकान्त की बातें सुनो तो तुम हैरान और आश्चर्य चकित रह जाओगी और तुम पर घबराहट तारी हो जायेगी। कोई नौजवान लड़का जब भी तुम्हें देखकर मुस्कुराता है, तुमसे मीठी-मीठी बातें करता है, और तुम्हारे छोटे-मोटे काम भी कर देता है तो वास्तव में यह उसके छुपे हुये इरादे और ख़्वाहिशों की भूमिका होती है, या कम से कम ख़ुशफ़हमी में ही मुब्तेला हो जाता है कि चलो शुरूआत तो हुई।

और फिर इसके बाद क्या होता है ? बेटी बताओ तो सही, क्या होता है ? सोचो, और ग़ौर करो ! तुम दोनों एक लम्हे के लिये गुनाह के लज़्ज़त में शरीक़ होते हो उसके बाद वह तो भूल जाता है कि उसने क्या करतूत किया।

मगर हां तुम ज़रूर ग़म व गुस्सा के घूंट पी पीकर ज़िन्दगी गुज़ारती हो।

वह फिर धीरे से किसी और भोली-भाली लड़की का शिकार करता है और उसकी इज़्ज़त और आबरू की चादर को नोच डालता है और तुम्हारे पेट में गर्भ का बोझ डाल जाता है, जिस बोझ से तुम दबी जाती हो, दिल ग़म से फटा पड़ता है और कलंक का टीका तुम्हारे माथे पर लग जाता है। उस ज़ालिम और दुराचारी को समाज यह कह कर माफ़ भी कर देता है कि जवान था, क़दम फ़िसल गया, लेकिन फिर संभल भी तो गया, तौबा व इस्तिग़फ़ार कर ली है।

और तुम! तुम तो ज़िन्दगी भर ज़िल्लत व रुसवाई के आलम में रहोगी। समाज तुम्हे माफ़ नहीं करेगा। काश ! तुम पहली मुलाक़ात ही में तन कर खड़ी हो गयी होती, उससे नज़र फेर ली होती और मज़बूत इरादे के साथ बेरुखी और बेतवज्जही का इज़हार किया होता और अगर यह उपाय और कोशिश भी नाकाम हो जाती और बात बेशर्मी और बेहयायी तक पहुँच जाती, वह बदतमीज़ी और बेशर्मी पर उतर आता और उसी लम्हें तुम जूती उतार कर उसके सर पर रसीद कर देती। अगर तुम ऐसा करती तो फिर देखती कि उस राह से गुज़रने वाला हर व्यक्ति तुम्हारा मददगार और सहारा बन जाता और फिर किसी बदकार और दुराचारी को किसी शरीफ़ लड़की पर हाथ डालने की हिम्मत न पड़ती और फिर उसके अन्दर अगर कुछ दीनदारी होती तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करके तुम्हारे पास आता और हलाल और जाइज़ तरीक़े से सम्बंध स्थापित करने के लिये तुमसे शादी की दरख़्वास्त करता कि यह तो इज़्ज़त और पाकदामन लड़की है।

सच तो यह है कि लड़की चाहे कितनी भी तरक़्क़ी कर जाये, इज़्ज़त व दौलत, शोहरत की मालिक हो जाये, उसकी आख़री तमन्ना और इच्छा आख़िरकार शादी ही क़रार पाती है, उसकी कामयाबी इस बात में निहित है कि

वह नेक और शरीफ़ बीवी बन जाये, एक बाइज़्ज़त माँ का मुक़ाम उसे हासिल हो और बिलआख़िर वह घर की मालकिन बन जाये। यह हक़ीक़त सब ही औरतों पर बराबर से चस्पा होती है चाहे वह किसी शहंशाह की बीवी हो या बेटी और अमीरज़ादी हों या दुनिया की मशहूर फ़िल्मी अदाकारायें हों, जिनकी चमक-दमक और दिखावे से बहुत सी औरतें धोखा खा जाती हैं। मिस्र व सीरिया में साहित्यिक दुनिया की दो महान और प्रसिद्ध साहित्यकार औरतों का हाल मुझे अच्छी तरह से मालूम है। उनके क़दमों में मालो-दौलत और साहित्यिक सम्मान का पदक तो डाल दिया गया, लेकिन दोनों ही ने अपने शौहरों को खो दिया उनकी अक़्ल भी मारी गयी और दीवानी हो गयीं यह दोनों ही औरतें बहुत ही मशहूर हैं, इनका नाम बताने पर मुझे मजबूर न करो। औरत की आख़िरी आरज़ू शादी ही होती है, चाहे वह पार्लियामेन्ट की मेम्बर और इक़्तिदार और हुकूमत की मालिक ही क्यों न हो। किसी बेइज़्ज़त और बदकार (चरित्रहीन) औरत से शादी करना कोई मर्द पसन्द नहीं करता, यहां तक कि शादी के वादे पर वह मर्द जो किसी शरीफ़ लड़की को ग़लत रास्ते पर डाल देता है अगर वह लड़की उसके जाल में फंस कर ग़लत रास्ते पर चल निकले तो वह भी उसे छोड़ कर आगे बढ़ जाता है और जब उसे वाक़ई शादी की ख़्वाहिश होती है तो किसी शरीफ़ और नेक लड़की से शादी करता है। क्यों कि वह ऐसी औरत को अपने घर की मालकिन और अपने बच्चे की माँ बनाना नहीं पसन्द करता जिसके एख़लाक़ और चरित्र का दीवाला निकल चुका हो।

मर्द चाहे कैसा ही बदचलन और बदकार हो, जब बाज़ारे हुस्न में उसे कोई ऐसी लड़की हाथ न आयेगी जो अपनी इज़्ज़त व आबरू की चादर को उसके क़दमों पर न्योछावर कर दे और उसके हाथ का खिलौना बनने के लिये तैयार हो जाये, जब वह किसी बदकार या भोली-भाली लड़की को तलाश करने

में नाक़ाम हो जायेगा, जो कुत्ते और बिल्लियों के तरीके और शैतानी ढंग से उससे शादी कर सके तो हरहाल में वह ऐसी लड़की को तलाश करेगा जो इस्लामी तरीक़े पर उस की बीवी बन सके।

बेटियों ! शादी की मन्डी में मन्दी तुम्हारी वजह से आई है। अगर तुम्हारे अन्दर अपनी इज़्ज़त व आबरू की परवाह करने वाली लड़कियां न हों तो वह मन्दी कभी देखने में न आये और न गुनाहों की मन्डी को तरक़्क़ी हासिल हो। जब स्थिति यह है तो तुम ख़ामोश क्यों बैठी हो? शरीफ़ औरतें इस मुसीबत के खिलाफ़ क्यों न एक हो जायें। यक़ीन जानों, इस काम के लिये तुम ही ज़्यादा मुनासिब हो और हम मर्दों की अपेक्षा इस स्थिति से निपटने की ज़्यादा ताक़त भी तुम ही को हासिल है, इसलिये कि तुम औरतों की भाषा और शैली से ज़्यादा वाक़िफ़ हो और उन्हें अपनी बात तुम ज़्यादा अच्छी तरह समझा सकती हो। इसलिये भी तुम्हें यह काम अन्जाम देना चाहिये कि इस बिगाड़ का निशाना तुम्हारी ही ज़ात बनती है। यह हक़ीक़त है कि पाकदामन, शरीफ़, नेक, दीनदार और छल व कपट से नावाकिफ़ लड़कियां उसका शिकार होती हैं।

मुल्क सीरिया का हाल यह है कि वहां हर घर में लड़कियां शादी के इन्तिज़ार में बैठी हैं, उन्हें कोई मुनासिब रिश्ता नहीं मिल रहा। इसलिये कि गर्ल्स फ्रेन्ड्स से उन नौजवानों को वहां सब कुछ हासिल हो जाता है जो उन्हें हलाल और जायज़ बीवियों से बेपरवाह किये हुये हैं। यह तो सीरिया की मिसाल है। मुम्किन है, दूसरे अरब मुल्कों में भी यही स्थिति हो।

इस भयानक स्थिति का मुक़ाबला इस तौर पर हो सकता है कि साहित्य और अदब से सम्बंध रखने वाली औरतें, स्कूलों की टीचर्स और यूनिवर्सिटियों की छात्राओं के ग्रुप बनाओ और इस प्लेटफार्म से अपनी

गुमराह और भटकी हुई बहनों को सीधे रास्ते की तरफ़ आने की दावत दो, उनके दिलों में ख़ुदा का ख़ौफ़ पैदा करो। अगर इससे भी उनके दिल न सहमें तो अस्ल मर्ज़ से उन्हें डराओ, अगर इससे भी न मानें तो सीधे और स्पष्ट अन्दाज़ में उनसे बात करो, उन्हें समझाओ कि अभी तुम्हारे अन्दर जवानी की दिल फ़रेबियां और दिलरूबाइया हैं इसलिये नौजवान लड़के तुम्हारे ऊपर जान छिड़कते हैं और तुम्हारे गिर्द चक्कर लगाते फिरते हैं। मगर ज़रा यह तो बताओ कि क्या जवानी का यह अल्हड़पन, ख़ासीयत, ख़ूबसूरती और हुस्न हमेशा क़ायम रहेगा? आख़िर दुनिया की किस चीज़ को हमेशगी और स्थायित्व हासिल है कि लड़की का लड़कपन और हसीनों का हुस्न हमेशा बना रहेगा? ज़रा सोचो तो सही, क्या हाल होगा तुम्हारा उस वक़्त जब तुम बूढ़ी हो जाओगी, रीढ़ की हड्डी तक टेढ़ी हो जायेगी और चेहरे पर चमक और रौनक़ के बजाये झुर्रियां पड़ी होंगी। फिर उस वक़्त किसकी मुहब्बत भरी नज़रें तुम्हारी तरफ़ उठेंगी? और कौन तुम्हारी ख़बर गीरी करेगा।

तुम्हें मालूम भी है कि बूढ़ी औरतों की इज़्ज़त और सम्मान कौन लोग करते हैं? बेटे, बेटियां, पोते, पोतियां उनकी इज़्ज़त व सम्मान करते हैं। और इस मर्हले में बेटे, बेटियों, पोते-पोतियों वाली ख़ातून अपने घर, ख़ानदान की मलिका होती हैं और ख़ुशनसीबी के तख़्त पर आसीन होती हैं। जबकि दूसरी औरत ---- उस पर जो इस हाल से गुज़रता है इससे तुम ज़्यादा वाक़िफ़ हो।

क्या यह लज़्ज़तें उन तकलीफ़ों का बदल हो सकती हैं और क्या इस ''आगाज़'' के बदले उस दर्दनाक और भयानक ''अंजाम'' का सौदा किया जा सकता है?

इस तरह की बातें किसी दलील की मोहताज नहीं हैं। अलबत्ता

अपनी इन ग़रीब और गुमराह बहनों की रहनुमाई करने में कोई कसर न उठा रखो। लेकिन अगर उसमें तुम्हें कामयाबी नसीब न हो तो कम से कम उन नौजवान भोली-भाली लड़कियों को उनकी राह पर जाने से तो बचा लो जो अभी इस मर्ज़े इश्क व प्यार की बीमारी से नावाकिफ़ हैं।

प्यारी बेटी !

मैं तुम से यह नहीं कहता कि एक ही लम्हे में मुसलमान औरत के अन्दर वह तबदीलियां ले आओ जो एक सच्ची और पक्की मुसलमान औरत को वांछित होती है। मुझे मालूम है कि कोई बड़ा काम अचानक नहीं हुआ करता। इसलिये किसी जल्दबाज़ी और शीघ्रता की ज़रूरत नहीं है।

तुम्हें तो धीरे-धीरे नेकी और भलाई की तरफ़ लौट कर आना है, जिस तरह बुराई और गन्दगी की तरफ तुम्हारे क़दम चुपचाप गये थे। याद होगा, तुमने थोड़ा-थोड़ा अपने लिबास को कम करना शुरू किया था और इसी तर्ज़ पर पर्दा भी बारीक और पारदर्शी होता चला गया था, और इस स्टेज पर पहुंचने में जिस पर आज तुम पहुंच चुकी हो, तुम्हें एक लम्बा समय लगा है, यहां तक कि तुम्हारे घर के शरीफ़ मर्दों को उसका एहसास भी न हो सका कि तुम किस मन्ज़िल की तरफ़ क़दम बढ़ा रही हो। तुम्हारी इस बेराहवी पर गन्दी और अश्लील पत्रिकायें आग में घी का काम करती थीं। बदचलन और चरित्रहीन लोग तुम्हें देखकर खुशी से फूल जाते थे। इस पूरे माहौल ने तुम्हें एक ऐसे मुक़ाम पर पहुंचा दिया जिस पर देखना न इस्लाम पसन्द करता है और न ही इसाई मज़हब। यहां तक कि आग पूजने वाले मजूसियों ने भी यह राह इख़्तियार नहीं की, जिनके हालात आज हम तारीख़ में पढ़ते हैं। यहां तक कि हैवान और जानवर भी इस तौर-तरीके से परहेज़ करते हैं। जानवरों तक में यह बात पाई जाती है कि जब एक ही मुर्गी पर दो मुर्गे जमा हो जाते हैं तो

उनमें से हर एक ग़ैरत के मारे और उस मुर्गी को दूसरे को हमले से बचाने की ख़ातिर मर मिटता है। मगर बुरा हो उन मर्दों का कि यह उनसे भी बुरे और बदतर हैं।

इस्किन्दरिया और बेरूत के समन्दरी तट पर मुसलमान औरतों को विदेशी पर्यटकों के साथ देखकर मुसलमानों को शर्म नहीं आती जो उनके साथ बड़ी बेशर्मी और बेहयाई के साथ घूमती-फ़िरती हैं। रात की महफ़िलों और नाइट क्लबों में मुसलमान औरतों को अजनबी मर्दों के सामने नाचने गाने के लिये पेश करते हैं जो उनसे इन्सानियत को शर्मसार करने वाला बेहयाई और बेशर्मी भरा बर्ताव करते हैं। यह है मौजूदा स्थिति जिससे किसी को इन्कार करने की हिम्मत नहीं।

मुस्लिम यूनिवर्सिटियों में भी कम या ज़्यादा यही हालत है। नौजवान मुस्लिम लड़के और लड़कियों को बेपर्दा और बेहयाई से अपने साथ बिठाते हैं। इस सूरते हाल पर न तो मुसलमान बाप नापसन्दीदगी का इज़हार करते हैं और न ही मुसलमान मायें इसे बुरा मानती हैं और ऐसी मिसालें ज़्यादातर आपको नज़र आयेंगी।

इसी तरह की दूसरी बुराइयाँ इतनी ज़्यादा हैं कि उन्हें एक दिन में ख़त्म नहीं किया जा सकता और न ही एक ही वक़्त में उन्हें दूर किया जा सकता है। सही तरीक़ा यह है कि हम हक़ के रास्ते की तरफ़ भी उसी अन्दाज़ से लौटें, जिस अन्दाज़ से बुरे रास्ते पर जा लगे थे। चाहे यह सफ़र लम्बा ही क्यों न हो। और यह वाक़िया है कि जो शख़्स लम्बे सफ़र से घबराता है हालांकि उसके अलावा और कोई रास्ता और उपाय भी नहीं, तो ऐसा शख़्स कभी भी अपनी मन्ज़िल पर नहीं पहुंच सकता। इन बुराइयों के ख़ात्मे के लिये हमें शुरूआती तौर पर नौजवान लड़कों और लड़कियों के स्वतन्त्र मेल-मिलाप के खिलाफ़ भी

आवाज़ बुलन्द करनी चाहिये जो पर्दे की आड़ में होता है।

रही बात चेहरा का पर्दा न करने की, तो इस सिलसिले में अर्ज़ है कि इसके खुले रहने से लड़की को कोई नुकसान पहुंचे और उसकी इज़्ज़त पर धब्बा लगने का कोई डर हो तब तो मामला आसान है (चेहरा खुला रहने में हर्ज नहीं है) और शायद यह मुल्क शाम वाले पर्दे से तो बेहतर है जिसे हम ‘‘हिजाब’’ कहते हैं। वह तो क़ाबिले शर्म मुक़ामात को ढांकना नहीं बल्कि हुस्न और सौन्दर्य को दो गुना करने और देखने वालों का दिल लुभाने की मात्र एक कोशिश और उपाय है।

चेहरा जैसा कुछ क़ुदरती शक्ल में है, इसको न छुपाना सबके नज़दीक हराम नहीं है। अगर्च हमारे नज़दीक इसका छुपाना भी बहुत ज़रूरी है और जब किसी फ़ितने और फ़साद का अन्देशा पैदा हो तो ऐसी सूरत में इसका पर्दा भी बहुत ज़रूरी है। लेकिन औरतों मर्दों का स्वतन्त्र मेलजोल तो बिल्कुल ही दूसरी चीज़ है।

बेपर्दगी के लिये इतना ही काफी नहीं है कि कोई औरत अपने महरम के बग़ैर अजनबी मर्दों से स्वतन्त्र रूप से मेल जोल रखे। बेपर्दा औरत अपने शौहर के दोस्त और साथियों का स्वागत अपने घर में करें या अगर वह ट्रामगाड़ी में सफ़र के दौरान मिल जाये या सड़क पर नज़र आ जाये, तो उससे बातचीत करे या कोई लड़की यूनिवर्सिटी के दोस्त से शेक हैण्ड करे या दोनों में बेहिचक और बेझिझक बात-चीत का दौर चलने लगे या वह लड़की उसके साथ चलकर कुछ दूर और जाये और आज़माइश और इम्तिहान के लिये तैयार हो जाये। अल्लाह ने उसे लड़की बनाया है और उसे लड़का बनाया है और दोनों ही लिंगों में एक दूसरे के प्रति आकर्षण और खिंचाव का माद्दा रखा है। न इसके बस में है और न उसके, कि वह अल्लाह के निज़ामे ख़िलक़त

में कोई परिवर्तन कर सके और सारी ख़ुदाई मिल कर भी यह परिवर्तन नहीं कर सकती। लोग न दोनों सिनफ़ो (सेक्स) में पूरी तरह से बराबरी क़ायम कर सकने पर क़ादिर हैं और न उनके दिलों से इस कशिश और खिंचाव के जज़्बों को ख़त्म कर सकते हैं।

संस्कृति और सभ्यता के नाम पर औरत व मर्द की बराबरी का नारा देने वाले लोग दो एतिबार से झूठे हैं :

पहले तो इस एतिबार से कि इन बातों से उनका मक़सद केवल अपनी वासनाओं की पूर्ति, अपने हैवानी रुझानात की संतुष्टि और नज़रबाज़ी से लज़्ज़त हासिल करना होता है। कोई और लज़्ज़त हासिल करना मक़सद नहीं होता। लेकिन उनके अन्दर यह हिम्मत नहीं कि अपनी गन्दी और घिनावनी नीयत का खुल कर इज़हार कर सकें। चुनांच अपने इरादे को ऐसे भारी भरकम शब्दों का जामा पहनाकर उन्होंने पेश किया, जिसकी कोई हक़ीक़त नहीं है, जैसे तरक़्क़ी पसन्द कल्चर, आर्ट और हमःगीर जामेअ ज़िन्दगी।

उनकी यह बकवास शानदार अल्फ़ाज़ के बावजूद बेमायने और ठोल का पोल है। दूसरे, इसलिये भी वह झूठे हैं कि योरुप जिसकी तरफ़ वह अपनी बात को जोड़ते हैं और जहां से वह रहनुमाई हासिल करते हैं और किसी बात को स्वीकार नहीं करते जब तक कि योरुप की उस पर मुहर न लगी हो। इसलिये कि उनके नज़दीक हक़ वह नहीं है जो बातिल के मुक़ाबले में हो बल्कि हक़ वह है जो पेरिस, लन्दन, वर्लिन और न्यूयार्क से आया हो, चाहे वह नाच-गाना और बेहयायी हो, यूनिवर्सिटियों में लड़के - लड़कियों का स्वतन्त्र मेल जोल हो, स्टेडियमों और क्लबों में बेपर्दगी और समन्दरी किनारे की नग्नता हो, यह सब हक़ है। और बातिल वह है जो जामेअ अज़हर, जामेअ

उमवी और उन पूर्वी अन्दाज़ की इस्लामी मदरसों और मस्जिदों की तरफ़ से पहुँचे, चाहे वह एख़लाक़ की बुलन्दी, ख़ुदाई हिदायत, पाक़दामनी और पाक़ीज़गी (चरित्र की शुद्धता) और दिल और जिस्म की पाकी और सफ़ाई ही क्यों न हो। जहां तक मैंने यूरोप व अमरीका के बारे में पढ़ा है और वहां अपने जानने वालों से मालूमात हासिल की है, इससे पता चलता है कि वहां ऐसे बहुत से ख़ानदान हैं जो न तो ऐसे स्वतन्त्र मेल जोल को पसन्द करते हैं और न वह उसको बर्दाश्त करते हैं। ख़ुद पेरिस में ऐसे माँ-बाप की कमी नहीं जो अपनी बड़ी उम्र की लड़कियों को नौजवान लड़कों के साथ टहलने-घूमने की इजाज़त देते हैं और न उनके साथ पिक्चर देखने को पसन्द करते हैं बल्कि वह अपनी बच्चियों को उन नेक अच्छे आमाल और तौर-तरीके का आदी बनाते हैं जिनके सम्बंध से उन्हें यक़ीन होता है कि वह गुनाहों, ग़ल्तियों, बेहयायी और बेशर्मी से पाक हैं। यूरोप और अमरीका वह मुक़ामात हैं जहां हर तरह की ख़ुराफ़ात बेकार और बेहूदा इश्किया ड्रामें आम हैं। जिसे मिस्र की बेहूदा और शर्म व हया से दूर कम्पनियां फ़िल्म का नाम देती हैं। जैसे वह दीन से जाहिल है वैसे ही वह पिक्चर की कला से भी नावाक़िफ़ हैं।

औरतों की आज़ादी के समर्थकों की दलील सुनिये- ''औरतों और मर्दों का आज़ादाना मेलजोल दरअस्ल काम-वासना की शक्ति को तोड़ देता है, एख़लाक़ में शाइस्तगी और शालीनता पैदा करता है और तबीयत से इस वासना-शक्ति को ख़त्म कर देता है''

मैं इसका जवाब उन लोगों पर छोड़ देता हूँ जो कालेजों, यूनिवर्सिटियों में आज़ादाना मेलजोल के तजुर्बे से गुज़र चुके हैं। वही इसका सही जवाब देंगे। क्या तुमने इस हक़ीक़त पर ग़ौर नहीं किया कि रूस - जिसका धर्म और नैतिकता से कोई लेना-देना नहीं और जो किसी आलिम या पादरी

का फ़तवा नहीं सुनता। उसने जब स्वतन्त्र मेल-जोल के फ़ितने व फ़साद को अपनी आंखों से देख लिया तो अपनी राय को बदल नहीं लिया ?

हरचे दाना कुनद कुनद नादां
लेक बाद अज़ ख़राबीये बिस्यार

रहा अमरीका, तो क्या इसके बारे में तुमने नहीं पढ़ा कि वहां का सबसे बड़ा समाजी मस्ला गर्भवती छात्राओं की अधिक संख्या है। जब वहां यह स्थिति है तो फिर कौन ऐसा इन्सान होगा जिसे मिस्र व शाम और दूसरे मुस्लिम मुल्कों में यह सूरते हाल देखकर खुशी होगी। इस वक़्त नौजवान लड़कों से मैं मुख़ातिब नहीं हूँ और न मुझे इसकी कोई ख़्वाहिश ही है कि वह मेरी सुनें। मुझे इसका अच्छी तरह से अन्दाज़ा है कि वह लोग मेरी बातों को ज़्यादा अहमियत नहीं देंगे और मेरी राय को बेवकूफ़ी का नाम देंगे। क्यों कि मैं तो उन्हें इन लज़्ज़तों से वंचित कर देने का सबब बनूंगा जिसके तअल्लुक़ से खुद इन हज़रात की गवाही है कि वह इससे सही मायने में फ़ायदा उठा चुके हैं।

मेरी बेटियों ! मैं तुमसे गुफ़्तगू कर रहा हूँ ऐ मेरी दीनदार और मोमिन बेटियो ! ऐ मेरी शरीफ़ और पाकदामन बेटियों ! याद रखना, नामहरमों की गोद में जाकर बलि का बकरा तुम ही बनोगी। इसलिये शैतान की क़ुर्बानगाह पर क़ुर्बान होने के लिये क़दम मत बढ़ाना। इन चिकनी-चुपड़ी बातें करने वालों के मकड़जाल में मत आना जो लड़के और लड़कियों के आज़ादाना मेलजोल को फ़िक्र की आज़ादी, कल्चर, तरक्की पसन्दी, आर्ट और हमःगीर ज़िन्दगी क़रार देते हैं। उनकी बातों में इसलिये न आना कि उनकी अकसरीयत ऐसी है जिनके पास न बीवी होती है और न औलाद ! और तुम लड़कियों से उन्हें सिवाये वक़्ती लज़्ज़त हासिल करने के और कोई मतलब नहीं है। रही मेरी बात तो सुनो, मैं तो कई लड़कियों का बाप हूँ । जिस वक़्त मैं

तुम लोगों की तरफ़ से मदाफ़ेअत (डिफेन्स) करता हूँ तो दरहक़ीक़त अपनी बेटियों का दिफ़ाअ करता हूँ। मैं तुम्हारे लिये वही ख़ैर व भलाई चाहता हूँ जो उन लड़कियों के लिये चाहता हूँ। इन हज़रात की लुभावनी और चिकनी-चुपड़ी बातों से न तो उस लड़की का जौहरे इस्मत (सतीत्व) वापस आता है और न उसकी पाकदामनी और शराफ़त लौट सकती है जो कलंकित हो चुकी है और न उसकी खोई हुयी इज़्ज़त व आबरू वापस मिल सकती है। हक़ीक़त यह है कि जब किसी लड़की से कोई ग़लती हो जाती है तो कोई भी मर्द उसकी मदद को नहीं आता। न उसे उसको गड्ढ़े से निकालने में मदद करता है तुम देखोगी कि ये सारे के सारे मर्द जो हुस्न व ख़ूबसूरती के आशिक और उस पर कुर्बान होते हैं, उनका यह इश्क और प्यार उसी वक़्त तक के लिये होता है जब तक उनकी यह ख़ूबसूरती बरक़रार रहती है। जब हुस्न (सौन्दर्य) मुर्झाने लगता है तो यह जान छिड़कने वाले आशिक भी रफ़ू चक्कर हो जाते हैं। ठीक उसी तरह जैसे कुत्ता उस लाश से वापस आ जाता है जिसमें कोई मज़ेदार गोश्त नहीं रह जाता ।

प्यारी बेटी !

तुम्हारे हक़ में मेरी यह नसीहत है और यही सच है तो तुम किसी और बात को ख़ातिर में न लाना और यह जान लो कि तुम्हारी इज़्ज़त तुम्हारे हाथ में है हम मर्दों के हाथ में नहीं है इस्लाह की कुन्जी तुम्हारे हाथ में है अगर तुम चाहोगी तो अपनी इस्लाह आप कर लोगी और तुम्हारी इस्लाह से सारी उम्मत की इस्लाह हो जायेगी।

वस्सलाम

अली तन्तावी